International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण विद्यार्थियों (छात्रों) में प्रतिगामी–अनुगामी विकास का अध्ययन

डॉ. तृप्ती सैनी[1], पिंकी कुमारी रेवाड़[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड, एम.एड छात्रा बियानी गर्ल्स बी.एड कॉलेज जयपुर

सारांश :–

समाज में एक अच्छे और सुव्यवस्थित समाज की कल्पना की जा सकती है। जब उस समाज को शिक्षित करने के लिए उचित रास्ते हो। आधुनिक युग के समाज को शिक्षित करने के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार अनेक माध्यमों से किया जा रहा है। जिसमें वर्तमान में प्रचलन में इन्टरनेट शिक्षा है। इन्टरनेट शिक्षा से दूर–दूर तक शिक्षा–शिक्षण कराया जा रहा है। परन्तु इन्टरनेट शिक्षा से कुछ हानियां भी है और लाभ भी है। इसके लिए इन हानियों का पता करने एव उनके नुकसान से बचने के लिए छात्रा पिंकी कुमारी रेवाड़ द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (250) का विश्लेषण कर इन्टरनेट शिक्षा के अनुगामी व प्रतिगामी प्रभाव का पता किया गया। प्रस्तुत आलेख में इन्टरनेट के अनुगामी व प्रतिगामी प्रभावों का विश्लेषण किया गया। जिसके लिए शहरी व ग्रामीण 125 व 125 विद्यार्थियों (छात्र–छात्रा) का क्षेत्रानुसार इन्टरनेट के प्रतिगामी व अनुगामी प्रभावों को विश्लेषित किया गया।

की वर्ड :– 1.माध्यमिक स्तर 2. प्रतिगामी 3. अनुगामी 4. इन्टरनेट शिक्षा 5. समकालिन 6. असमकालिक

प्रस्तावना

परिवर्तन का निमय है। प्रकृति में प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहा है। समाज में भी प्रत्येक क्षण परिवर्तन होते रहते है। पुराने विचारों के स्थान पर नवीन विचारधाराओं का अन्य पुरानी के स्थान पर नवीन विचारधाराओं का अन्य पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नवीन मान्यताओं द्वारा स्थान ले लिया जाता है, पुराने मुल्यों पर नवीन मुल्य आ रहे है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अपेक्षित परिवर्तन से उसमें नई चेतना आती है। यह परिवर्तन शिक्षा क्षेत्र में निरन्तर आते है। उसे आगे प्रगति की ओर अग्रसर करता है। बदलते समाज एवं युग को शिक्षित करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा साधनों में भी परिवर्तन किया जाए तथा उन पहलुओं को जोडा जाए जो आधुनिक युग में विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सम्भव है। इस सन्दर्भ में विश्व में तकनीकी दृष्टि से प्रगति हो रही है उसे ध्यान में रखकर शिक्षाविदो एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा शिक्षा में तकनीकी माध्यम से शिक्षा साधनों द्वारा शिक्षा में सुधार का प्रयास किया जा रहा है। इसे शैक्षिक नवाचार कहा जाता है।

वर्तमान समय में मनुष्य समय को महत्व देकर समय की बचत के साथ–साथ कम समय में अधिक उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए तकनीकी के नई–नई खोज करके विश्व को आधुनिकता की ओर मोड लाया गया जहाँ एक समय था जब व्यक्ति अपने छोटे कोर्स को करने के लिए काफी समय लेकर उस कार्य को करता था।

जैसे – एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए परन्तु आधुनिकता में तकनीकी विकास में एक छोटे से फोन पर दूसरी जगह जाने के लिए परन्तु आधुनिकता में तकनीकी विकास में एक छोटे से फोन पर दूसरी जगह जाने के लिए परन्तु आधुनिकता में तकनीकी विकास में एक छोटे से फोन पर दूसरी जगह सूचना को पहुँचा दिया जाता है।

तकनीकी में मनुष्य की खोज में एक इन्टरनेट शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें व्यक्ति अपनी शैक्षिक उद्देश्यों को कम समय में प्राप्त किया जा सकता है इन्टरनेट के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना इन्टरनेट शिक्षा कहलाता है।

समस्या कथन :–
उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण विद्यार्थियों में प्रतिगामी अनुगामी विकास का अध्ययन करना।

शोध के उद्देश्य :–
1. उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण विद्यार्थियों में प्रतिगामी–अनुगामी विकास का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण शहरी विधालय के छात्र–छात्राओं में प्रतिगामी अनुगामी विकास का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा :–

1. **शोध शीर्षक – साउथ बंगाल में इन्टरनेट शिक्षण सम्बन्धी समस्याये।**
   शोधकर्त्री :– सुहेल सेन शेयर्सी (2022) चरर्जी अंकितादास
   उद्देश्य :– इस शोध द्वारा दक्षिगी बंगाल के छात्र तथा शिक्षको के शिक्षा एवं सम्बन्धि समस्याओं का विश्लेषण करना।
   विधि :– सर्वेक्षण विधि
   न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध हेतु 180 व्यक्तियों का चयन किया गया है।
   निष्कर्ष :– उपलब्धि इस शोध अध्ययन से पता चला है कि खराब इन्टरनेट क्नेशन के साथ–साथ इसकी पहुँच में कमी और प्रकाश की विफल सबसे गंभीर समस्या बनी जिससे छात्र व शिक्षक प्रभावित हुए।

2. **शोध शीर्षक :– ऑनलाइन व आमने–सामने पेश किए गए गणित पाठ्यक्रमों केबीच छात्र की सफलता की तुलना करना (2028)**
   शोधकर्त्री :– विलियम ए सत्यादेश स्कोर डब्ल्यू मकै वरी
   उद्देश्य :– इस शोध का उद्देश्य एक शोध अध्ययन प्रस्तुत करना है जो अलग–अलग शैक्षिक वातावरण में पेश किए गए गणित पाठ्यक्रमों में छात्र की सफलता की तुलना करता है।
   विधि : काई स्क्वायर परीक्षण π चार्ट
   न्यादर्श : 167 विधार्थी का चयन
   निष्कर्ष :– इस अध्ययन से पता चलता है कि आमने–सामने शिक्षण ग्रहण किए गए छात्रों का अनुपात इन्टरनेट शिक्षा ग्रहण किए गए छात्रों से अधिक है।

3. **शोध शीर्षक :– इन्टरनेट प्रभावी शिक्षण–दूरस्थ शिक्षा में दूरी कम करना।**
शोधकर्त्री :– एरिका सी मैरीहक, हाफिन (2020)
उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए छात्रों तथा शिक्षकों के द्वारा पहचाने गए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की जांच कर प्रभावी इन्टरनेट शिक्षण वातावरण के विकास और कार्यान्वन को सुचित करता है।
विधि :– सर्वेक्षण, प्रश्नावली विधि का प्रयोग
न्यादर्श :– स्नात्तक एवं स्नात्तकोतर इन्टरनेट पाठ्यक्रम के शिक्षक व 9 छात्रों का चयन किया गया।
निष्कर्ष :– ऑनलाइन कार्यक्रम कि विभिन्न घटकों ने छात्रों को एक प्रभावी इन्टरनेट शिक्षण सीखने का अनुभव प्रदान किया है। प्रभावी इन्टरनेट शिक्षण समुदायों के निर्माण के लिए आवश्यक ज्ञान कौशल व प्रस्तावों को प्राप्त करने में विश्वविद्यालयों बेहतर तरीके से संकाय का समर्थन करते है।

4. **'शोध शीर्षक : इन्टरनेट शिक्षण के प्रति छात्रों की धारणाए तुलनात्मक अध्ययन**
शोधकर्त्री : कार्नएल, स्मार्ट जे
उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध का उद्देश्य तकनीकी व इन्टरनेट सीखने के साथ पूर्व अनुभव कैसे छात्रो के ई–लर्निंग के प्रति व्यवहार को प्रभावित करता है का पता लगाना।
विधि– सर्वेक्षण विधि
शोध उपकरण :– टी टेस्ट
न्यादर्श– कॉलेज के 54 छात्र–छात्राओं का चयन
निष्कर्ष :– इन्टरनेट शिक्षण छात्रो ये ई लर्निंग के साथ–साथ अनुभव व भविष्य में इसका उपयोग करने में उन्हे प्रभावी बनाने मे मदद करता है इन्टरनेट पाठ्यक्रम में छतीस व वैकल्पिक पाठ्यक्रम में 18 विद्यार्थियों से सर्वे पूरा किया जाएगा।

शोध अंतराल
साहित्य पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान के निष्कर्ष के साथ–साथ इस अनुसंधान के क्षेत्र को भी बतलाता है। इन्टरनेट शिक्षण विषय क्षेत्र के पुनरावलोकन सभी यह तथ्य उभर कर सामने आया कि सभी अनुसंधान में इन्टरनेट शिक्षा से संबंधित समस्याऐं किसी विषय वस्तु की सफलता इस शिक्षा के माध्यम से दुरस्थ शिक्षा में कमी इन्टरनेट शिक्षा के लाभ आदि क्षेत्र पर बात की गई है तथा इनके पुनरावलोकन में पाया गया कि इन्टरनेट शिक्षा के कारण विद्यार्थियों में किस प्रकार परिवर्तन हो रहे है। अतः लघु शोध साहित्य अन्तरालों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों में इन्टरनेट शिक्षा के कारण होने वाले अनुगामी तथा प्रतिगामी प्रभावों पर किया गया।

साहित्य विवचेना :–
पढ़ना मानव सभ्यता की सबसे पुरानी आदतों में से एक हैं, यह भी समय के अनुसार महानतम व्यक्तियों का जुनून रहा हैं।पहले पढ़ने लिखने के लिए सिर्फ पांडुलिपि एक मात्र पढ़ाई के स्रोत थे, जो केवल अभिजात वर्ग तक सीमित थे। सुहेल सेन शेयर्सी (2022) चरर्जी अंकितादास, विलियम ए सत्यादेश स्कोर डब्ल्यू मकै वरी, एरिका सी मैरीहक, हाफिन (2020), कार्नएल, स्मार्ट जे, लेकिन जैसे–जैसे विकास आधुनिकता का रूप लिया वैसे–वैसे यह स्रोत प्रिंटिंग प्रेस से पूरे समाज या फिर कहे की विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचने लगे।इंटरनेट के उदय होने के पश्चात पढ़ाई संस्कृती में एक असाधारण परिवर्तन हुआ तथा व्यक्ति का ज्ञान और विकसित होने लगा। लोगों के पढ़ने के व्यवहार में इस संस्कृति

का अस्तित्व पूरी तरह से आंशिक रूप से बढ़ा है वर्तमान में पढ़ने अब इंटरनेट क्रांति में वेबसाइट, ई–बुक, ई–पत्रिकाओं, ई–पेपर, ई–मेल, चर्चा बोर्ड चैट रूम मैसेजिंग, टेक्स्ट मैसेज, ब्ल०ग, विकिपीडिया और अन्य मल्टीमीडिया दस्तावेज अब संभावित पाठक घर पर पाठक के मस्तिष्क पर पूर्ण पर भूत जमा चुके हैं जिसमें इन्टरनेट शिक्षा एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका हैं।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि को चयन किया गया है। जिसमें स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

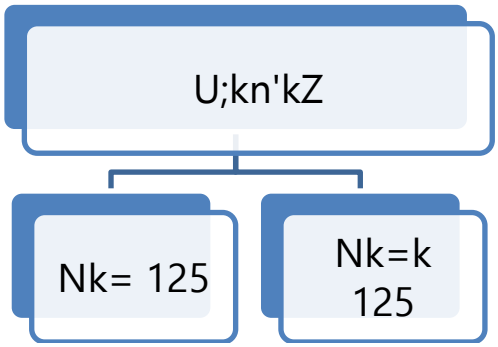

250 विधार्थी न्यादर्श के रूप में चयनित किये गया।
यादृच्छित विधि के तहत लॉटरी विधि का चयन किया गया।

शोध उपकरण :– प्रस्तुत शोध प्रदत्तों का श्रृंखलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया जिसमें 36 प्रश्नों का चयन किया गया जिसमें 36 प्रश्नों का चयन किया गया। जिनके आयाम निम्न प्रकार है।

क्र.स	शोध आयाम	कथन (प्रश्न)
1.	अधिगम समक्ष	6
2.	स्वास्थ्य एवं स्मृति	6
3.	सम्प्रेषण	6
4.	सामाजिक स्थिति	6
5.	समय	6
6.	तकनीकी उपयोग	6
	योग	36

न्यादर्श का चयन :–प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श का चुनाव यादृच्छिक विधि से किया गया है, इसके अन्तर्गत उच्च माध्यमिक के शहरी व ग्रामीण विधालयों का चयन किया गया है जिसमें कुल 2010 छात्र–छात्राऐं है उनमें 125 शहरी व 125 ग्रामीण है।

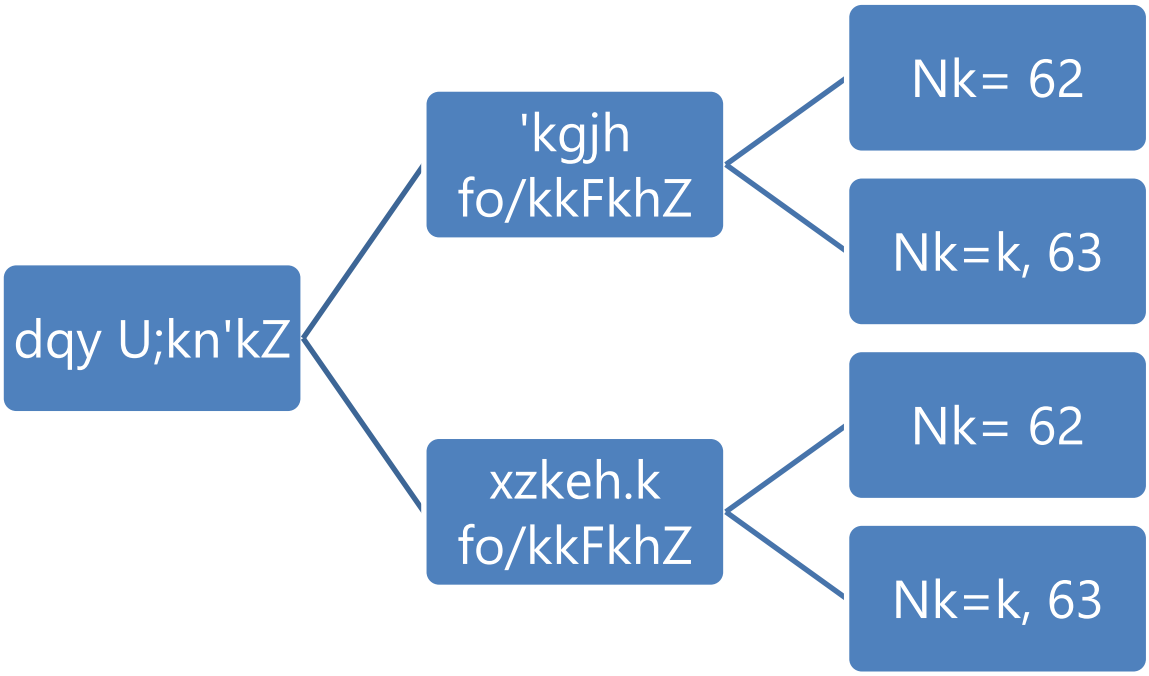

चर

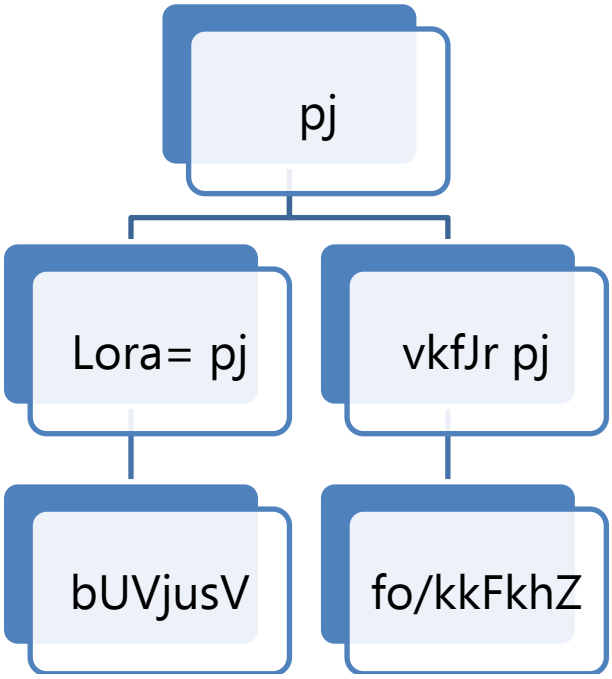

परिकल्पना :– उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण छात्र–छात्राओं में प्रतिगामी–अनुगामी विकास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र. स	विधार्थी न्यादर्श	मध्यमान		मानक विचलन		टी टेस्ट	सार्थकता स्तर
		अनूगामी	प्रतिगामी	अनूगामी	प्रतिगामी		
1.	छात्र	125	2.94	3.16	1.22	1.15	अस्वीकृत
2.	छात्राएं	125	2.94	3.18	1.23	1.15	

कत्रिछ¡छ$_2$.2 0.05 स्तर पर टी का मान 1.9720
100100.2 त्र 0.09 स्तर पर टी का मान – 1.2.6009
198

परिणाम :–

उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण छात्र–छात्राओं में प्रतिगाती–अनुगामी मध्यमान क्रमशः 2.94 व 2.90 तथा प्रतिगामी मध्यमान क्रमशः 3.16 व 3.18 एवं मानक विचलन अनुगामी के लिए 1.22 व 1.23 तथा प्रतिगामी के लिए 1.15 व 1.12 प्राप्त हुए।

उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के छात्र–छात्राओं प्रतिगामी–अनुगामी विकस से टी का मान 1.4976 है जो कि df के लिए सार्थकता स्तर पर 0. 05 पर सारणीय मूल्य अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर इन्टरनेट शिक्षा के कारण छात्र–छात्राओं में प्रतिगामी–अनुगामी विकास में सार्थक अन्तर पाया जाता है अर्थात् परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (छत्र250) के इन्टरनेट शिक्षा के सभी क्षेत्रावार विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त प्रदत्तो से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के इन्टरनेट शिक्षा के द्वारा एक ही समय पर दोनो प्रकार (प्रतिगामी व अनुगामी) के प्रभाव प्रकट होते है। जिसके अनुगामी के तुलना में प्रतिगामी प्रभाव अधिक होता है क्षेत्रावार विश्लेषण के अनुसार विद्यार्थियों में अधिगम समझने से सम्बंधित कारको (भूलने क्षीणता व अधिगम कार्य में जटिलता) के रूप में 42 प्रतिशत प्रतिगामी विकास होता है। जबकि अधिगम समझ के कारको सीखने की क्षमता के रूप मं 35 प्रतिशत अनुगामी विकास होता है। अतः इन्टरनेट शिक्षा के द्वारा छात्रों में प्रतिगामी विकास अधिक होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **एरिक पी. बूसी (2004) :** ''मिडिया एक्सेस : सोशल एण्ड साइकोलॉजीकल डाइमेन्शन्स ऑफ न्यू टेक्नोलॉजी यूज'' लॉरेन्स एलबम एसोसिएट 2004
- **बेस्ट जे. डब्ल्यू (2000) :** "रिसर्च इन एजुकेशन" प्रेक्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लि. नई दिल्ली।
- **बर्ग (2010) ''द इंटरनेट :** एन इंट्रोडक्शन टू न्यू मिडिया'' लेलिया ग्रीन।
- **चन्द्रा एस. एस. एवं शर्मा आर. के (1997)** रिसर्च इन एजुकेशन अटलांटिक, नई दिल्ली।
- **डरेल.एम.वेस्ट (2005) :** ''डिजिटल गर्वमेन्ट : टेक्नोलॉजी एण्ड पब्लिक सेक्टर परफोंमेन्स'' प्रिन्टीन यूनिर्वसिटी प्रेस 2005
- **डब्ल्यू स्पॉल;** सम रिसर्च इन्टू रिसर्च, जरनल ऑफ एप्लाईड सोशियोलॉजी,–9
- **गुप्ता, एस.पी.;** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, आगरा,03

Websites

[1]. https://hwgo.com/intl/hi/pc/campaigns/helping-women.html
[2]. https://hwgo.com/intl/hi/pc/campaigns/internet-saathi.html
[3]. https://hwgo.com/intl/hi/pc/campaigns/reach-for-the-sky.html
[4]. https://hwgo.com/intl/hi/pc/campaigns/internet-moms.html
[5]. https://hwgo.com/intl/hi/pc/campaigns/together-online.html
[6]. http://scholar.google.com